।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2021-23

दयानन्दाब्दः 199
मानव सृष्टि सं. : 1960853124
सृष्टि सं.: 1972949124

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/- आजीवन : रू.1100/- वार्षिक शुल्क : रू.100/- (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-22 अंक-05 मिति ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी से आषाढ़ कृष्ण द्वादशी तक 2080 विक्रमी 01 से 15 जून 2023 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

# वैदिक विचारधारा में है हर तरह की चुनौतियों का समाधान करने की सामर्थ्य : ओम बिरला

## आने वाले समय में भारतीय संस्कृति के अग्रदूत बनेंगे

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**नई दिल्ली।** भारतीय वैदिक संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान और वैदिक संस्कारों को स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने दुनिया में पहुंचाया। आज उनके बताए गए मार्ग पर चलते हुए अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले जवान बच्चों को वैदिक ज्ञान, वैदिक संस्कृति के बारे में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मैं इसके लिए संघ के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं और बधाई देता हूं। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों को आत्मसात करने की बात कही।

उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने एक ऐसा विचार दुनिया को दिया, जो आज भी भारतीय संस्कृति के रूप में वैदिक रीति से जीने की राह बताते हैं। उनकी वैदिक विचारधारा में हर तरह की चुनौतियों का समाधान करने की सामर्थ्य शक्ति है और यह सामर्थ्य शक्ति हर तरह की कठिनाइयों में मनुष्य को समाधान का रास्ता दिखाती है। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ वनवासी बच्चों को स्वामी दयानंद की उसी ज्ञानधारा से आदिवासी बच्चों को प्रशिक्षण देकर हर तरह की चुनौतियों से समाधान की शिक्षा दे रहे हैं। आप सभी बच्चे सौभाग्यशाली हैं, आपका शिक्षण हो रहा है, प्रशिक्षण हो रहा है, वैदिक संस्कृति का ज्ञान आपको प्राप्त हो रहा है, आप वैदिक विज्ञान से पढ़कर निकलेंगे और आने वाले समय में भारतीय संस्कृति के अग्रदूत बनेंगे। इस तरह विश्व के अंदर हमारा वैदिक विज्ञान और संस्कृति पहुंचेगी। और स्वामी दयानंद सरस्वती के द्वारा दिए गए वैदिक

ज्ञान से ही समाज में नया परिवर्तन आएगा।

**बच्चों में हो रहा अच्छे संस्कारों का बीजारोपण**

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ने आदिवासी इलाकों के अंदर, इन बच्चे, बच्चियों अंदर विद्यार्थियों में बच्चियों के अंदर और विद्यार्थियों के अंदर अच्छे संस्कारों का बीजारोपण किया है, एक अच्छी आध्यात्मिक संस्कृति, वेदिक रीति का बीजारोपण किया है उससे इनके जीवन को नई दिशा और ऊर्जा मिलेगी।जितने देशों ने भौतिक संसाधनों के आधार पर देश को चलाने का काम किया उनको भी हमने देखा है , वहां के लोगों में , अवसाद, निराशा और मानसिक तनाव बना रहता है। लेकिन वैदिक संस्कारों से व्यक्ति ऊजार्वान रहता है और सफलता प्राप्त करता है। गुरुकुलों में छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया कार्यक्रम का संचालन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे गुरुकुलों में छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्हें शिक्षा ग्रहण कर अपने अपने क्षेत्र में वैदिक विचार धारा को प्रसारित प्रचारित करने का अवसर मिलता है।

शेष अंतिम पृष्ठ पर

# आर्यावर्त केसरी

विविध दर्शन

पाक्षिक हिन्दी समाचार पत्र, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

01 से 15 जून 2023




## सम्पादकीय

## मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा

हमें मनुष्य का जीवन मिला हुआ है। इस जीवन को प्राप्त करने में हमारे माता-पिता का योगदान निर्विवाद है, परन्तु इसके साथ ही हमारी आत्मा और शरीर का सम्बन्ध कराने वाला सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा है। यदि परमात्मा न होता तो न तो यह सृष्टि अस्तित्व में आती और न ही इस सृष्टि में प्राणी जगत का अस्तित्व होता। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और उसने ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता से अनादि, नित्य, अमर तथा नाशरहित जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का सुख व दुःखरुपी फल देने के लिये ही इस संसार की रचना की है और वही इसका पालन व संचालन कर रहे हैं। सृष्टि का उपादान कारण जड़ प्रकृति है जो प्रलयावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत्व, रज एवं तम गुणों वाली होती है। हम सभी मनुष्यों को ईश्वर को जानना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना है जिससे हम अपने जीवन में दुःखों से बचे रहें और मृत्यु के बाद हमे मोक्ष प्राप्त हो सके। यदि हम मोक्ष की अर्हता पूरी न कर सकें तब भी हमें श्रेष्ठ मनुष्यों की देवयोनि में जन्म मिले जहां रहते हुए हम पुनः मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें और उसे प्राप्त कर लें। जन्म व मृत्यु की पहेली को समझने के लिये सभी मनुष्यों को ऋषि दयानन्द कृत ह्यसत्यार्थप्रकाशह्ल आदि समस्त ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश में अनेक विषयों पर जो विस्तृत ज्ञान है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और यदि कुछ है भी, तो उसके लिये जिज्ञासु बन्धुओं को अनेक संस्कृत के वैदिक ग्रन्थों को पढ़ना होगा। सत्यार्थप्रकाश का महत्व यह है कि प्रायः सभी इष्ट विषयों का ज्ञान इस ग्रन्थ को पढ़कर 4-5 दिनों में ही हमें प्राप्त हो जाता है जिसमें सृष्टि व ईश्वर-जीवात्मा विषयक प्रायः सभी रहस्य सम्मिलित हैं। इसी कारण वेद मनीषी पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कहा था कि उन्होंने अपने जीवन में लगभग 18 बार ऋषि दयानन्द रचित ह्यसत्यार्थप्रकाशह्ल ग्रन्थ पढ़ा। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि सत्यार्थप्रकाश पढ़ने के लिये उन्हें अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति बेचनी पड़ती तब भी वह सहर्ष इस पुस्तक को प्राप्त करते। सत्यार्थप्रकाश का महत्व वर्णनातीत है। इसकी महत्ता एवं उपयोगिता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। संसार में तीन अनादि, अमर तथा नित्य सत्तायें ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। हम जीव हैं और हमारी ही तरह अनन्त जीवात्मायें इस ब्रह्माण्ड में हैं। हम जीवात्मा हैं और हमारा शरीर पंचभौतिक पदार्थों के संयोग से बना है। यह संयोग ईश्वर के बनाये नियमों व व्यवस्था के द्वारा होता है। जिसकी उत्पत्ति होती है उसका विनाश भी होता है और जिसकी उत्पत्ति नहीं हुई उसका विनाश कभी नहीं होता। इसी कारण हमारा शरीर नाशवान अर्थात मरणधर्मा है जबकि हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी और अमर है। हमारे इस शरीर के जन्म से पूर्व भी आत्मा का अस्तित्व था। हमारे इस शरीर के मृत्यु को प्राप्त होने पर भी हमारी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। ईश्वर अजन्मा है और इसके विपरीत जीवात्मा जन्म-मरण धर्मा है। इस जन्म से पूर्व भी हम अर्थात हमारी जीवात्मा अपने पूर्वजन्म में उस जन्म के भी पहले के जन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार किसी प्राणी योनी में इस ब्रह्माण्ड में कहीं इस पृथिवी के अनुरूप ग्रह पर जीवन व्यतीत कर रहे थे और ऐसा ही हमारे इस वर्तमान जीवन की मृत्यु के बाद भी होगा। परमात्मा की हम पर कृपा होने से वह हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार जन्म देता है और कर्मों के अनुसार ही हमारी जाति (मनुष्य, पशु वा पक्षी आदि), आयु और भोग (सुख व दुःख) निश्चित होते हैं। यदि परमात्मा व प्रकृति में से, दोनों अथवा कोई एक या दोनों ही, न होते तो हमारा जन्म व मरण नही हो सकता था और न ही हम किसी प्रकार के सुख व दुःखों का भोग कर सकते थे। हममें से कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, सभी प्राणी सुख, शान्ति व सुरक्षा चाहते हैं। सुखों का आधार शुभ व श्रेष्ठ कर्म हैं। अतः हमें अशुभ व पाप कर्मों को करना छोड़ना होगा। यदि हम पाप कर्मों को करना पूर्णतः छोड़ देंगे तो हमें दुःख प्राप्त नहीं होंगे और हम सुखपूर्वक इस जीवन को व्यतीत कर अगले जन्म में भी सुखी व श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त कर देवकोटि की मनुष्य योनि में जन्म लेकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

**अतिथि सम्पादकीय -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

## अध्यात्म सुविचार

आर्य विचार

यजुर्वेद ० ३१/१८

**तमेव विदित्वाऽति मृतयुमेति।।**

**परमात्मा को जानकर व्यक्ति मृत्यु से पार हो जाता है।**

# अथर्ववेद के भाष्यकार पं. राजाराम शास्त्री


**मनमोहन कुमार आर्य**

--------------------

**आर्यावर्त केसरी समाचार**

--------------------


आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान रहे डा. भवानीलाल भारतीय जी ने ह्यआर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान्ह्ल नाम से एक ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ में भारतीय जी ने 103 वेद सेवक विद्वानों का संक्षिप्त परिचय उनके लेखकीय कार्यों सहित दिया है। हमारे पास जो पुस्तक है इसका प्रकाशन आर्य प्रादेशक प्रतिनिधि सभा, अनारकली, मन्दिरमार्ग, नई दिल्ली-110001 से सन् 2007 में किया गया है। इस पुस्तक का प्राक्कथन विश्वनाथ जी ने लिखा है। पुस्तक की भूमिका डा. भवानीलाल भारतीय जी ने लिखी है। पुस्तक में पं. राजाराम जी पर पृष्ठ 112-113 में लगभग डेढ़ पृष्ठ की सामग्री प्रकाशित है। इसके महत्व को देखते हुए हम पाठकों के लिए भारतीय जी का पूरा आलेख प्रस्तुत कर रहे हैं।

लाहौर के विख्यात शिक्षण संस्थान डी.ए.वी. कालेज में वर्षों तक संस्कृत के प्रवक्ता रहे तथा विभिन्न शास्त्रों के व्याख्याकार पं. राजाराम शास्त्री का जन्म 1870 में पंजाब के जिला गुजरांवाला के एक ग्राम में हुआ था। (सम्पूर्ण अथर्ववेद एवं सामवेद भाष्यकार पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय जी भी पंजाब के गुजरांवाला में ही जन्मे थे- मनमोहन)। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने इनकी रुचि आर्यसमाज की शिक्षाओं की ओर जगाई। साथ ही इनमें संस्कृत पढ़ने का विचार उत्पन्न हुआ। काव्य, व्याकरण तथा न्याय शास्त्र का अध्ययन करने के पश्चात आपने महाभाष्य का अध्ययन जम्मू जाकर किया। 1892 में महात्मा हंसराज ने इन्हें डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में संस्कृत का अध्यापक नियुक्त किया। दो साल बाद 1894 में इन्हें लाहौर के डी.ए.वी. कालेज में संस्कृत के प्राध्यापक पद पर नियुक्ति मिल गई। 1899 में उच्च स्तरीय संस्कृत के शास्त्रीय अध्ययन के लिए ये काशी गए और वहां रहकर मीमांसा तथा यज्ञ प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन किया। लाहौर लौट आने पर कालेज कमेटी ने इन्हें वेद तथा आर्ष ग्रन्थों के भाषान्तर करने का कार्य सौंपा। 1904 में इन्होंने आहिताग्नि राय शिवनाथ के सहयोग से आर्ष ग्रन्थावली नामक मासिक पत्र निकाला जिसमें इनके किए विभिन्न



शास्त्रों के भाष्य छपते थे। शास्त्री जी ने विपुल मात्रा में लेखन कार्य किया है। इनके वेद विषयक लेखन का विवरण इस प्रकार है-

अथर्ववेद भाष्य-यह भाष्य विषय निर्देश, स्वर-सहित मंत्र पाठ, पुनः शब्दार्थ, तथा छन्द, ऋषि और विनियोग के निर्देश सहित अनेक टिप्पणियों से युक्त है। चार भागों में 1931 में प्रकाशित यह अथर्ववेद भाष्य मुख्यतः सायण तथा पाश्चात्य वेदज्ञों की शैली का अनुसरण करता है।

वेद व्याख्या विषयक अन्य ग्रन्थ- वेदोपदेश (2 भाग), स्वाध्याय यज्ञ, शताब्दी शातक-ईश्वार महिमापरक 100 वेद मंत्रों की व्याख्या (1925), उपदेश कुसुमांजलि (3 भागों में), वेद प्रकाश (अथर्ववेदीय पृथ्वी सूक्त की व्याख्या), वेद शिक्षक, वेद आदि लघु ग्रन्थ।

वेदाध्ययन में सहायक ग्रन्थ-वेद भाष्य भूमिका (1928), यास्कीय निरुक्त की टीका, कौत्सव्य निघण्टु, अथर्ववेद का निघण्टु, वसिष्ठ धर्म सूत्र तथा पारस्कर गृह्य सूत्र का सम्पादन, सामवेदीय आर्ष क्षुद्र सूत्रम् तथा औशनस धनुर्वेद संकलन।

इस विपुल साहित्य लेखन से पं. राजाराम की प्रचण्ड मेधा तथा उनका विस्तृत अध्ययन व्यक्त होता है। ग्यारह उपनिषदों की टीका लिखने के अतिरिक्त उन्होंने उपनिषदों की भूमिका तथा उपनिषदों की टीका नामक ग्रन्थ लिखकर उपनिषदों के अध्यात्मवाद का मार्मिक विवेचन किय था। (इति)

पं. राजाराम शास्त्री जी ने उपर्युक्त जो विस्तृत वैदिक साहित्य लिखा है वह सम्प्रति पुस्तक प्रकाशकों वा पुस्तक विक्रेताओं से उपलब्ध नहीं होता। ऐसे ही आर्य समाज के अनेक शीर्ष विद्वानों के साहित्य की उपलब्धता की स्थिति है। आर्यसमाज में वृहद सम्मेलन आदि आयोजन होते रहते हैं। विद्वानों के अनुपलब्ध साहित्य के संरक्षण के विषय में भी हमारी प्रतिनिधि सभाओं व विद्वानों को विचार करना चाहिये और समय-समय पर ऋषिभक्तों को इस विषय में अपने कार्यों व सामयिक विचारों से परिचित एवं प्रेरित करते रहना चाहिये। हम पं. राजाराम शास्त्री जी को उनके महान लेखन कार्यों वा सेवाओं के लिए स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि देते हैं।

# शिक्षण संस्थाओं में स्वस्थ वातावरण जरूरी


**प्रो. कनक रानी**
**पूर्व प्राचार्य, आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय**
**शाहजहांपुर**

--------------------

**आर्यावर्त केसरी समाचार**

--------------------


विद्यालयों में बालिकाओं के प्रति शिक्षक के दुर्व्यवहार की घटनाएं मर्माहत करती हैं, हतप्रभ करती हैं। ध्यातव्य है कि विद्यालय तो ज्ञान को प्रसारित करने के पावन स्थल हैं। यहां वातावरण की पवित्रता से संदर्भित प्रतिबद्धता आवश्यक है। शिक्षण संस्थाओं का सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण ही शासनिक योजनाओं- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ- को रूपायित कर सकता है, नारी सशक्तिकरण का आधार बन सकता है। विद्यालयों में ऐसी घटनाओं के दुष्परिणाम को आंकना सहज नहीं। बालिकाओं के विद्यार्थी जीवन में प्रतिकूल प्रभाव परिलक्षित हो सकता है।अवांक्षित परिस्थितियां उनकी मनः स्थिति को आहत कर सकती हैं, भविष्य को दुष्प्रभावित कर सकती हैं। उल्लेखनीय है कि रुग्ण, सदोष तथा अनपेक्षित आचार- व्यवहार लड़कियों के प्रति संवेदनहीनता को व्यक्त करता है, साथ ही सामाजिक क्षोभ को भी बढ़ाता है। ऐसी घटनाओं से छात्राओं- बेटियों के विद्यालय में पंजीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता हैं। सुरक्षा का विश्वास ही बेटियों को गतिशील बना सकता है। सोचने की बात है जब बेटियां विद्यालय में जाने से डरेंगी तो आगे कैसे बढ़ेंगी? इसमें कोई संदेह नहीं कि इस प्रकार की नकारात्मकता बालिकाओं को ही नहीं, अभिभावकों को भी उद्वेलित कर देती है।

शिक्षक एक गरिमामय पद है। हमारी संस्कृति शिक्षकों के उत्कृष्ट दायित्व को निर्देशित करती रही है। यहां शिष्य/ शिष्या के साथ संतानवत आचरण एवं व्यवहार विहित है। शिक्षक से सनातन संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप आचरण की अपेक्षा की जाती है। अवांछित आचरण एवं व्यवहार शिक्षक पद की गरिमा को खण्डित करता है। शिक्षक का लड़कियों के प्रति अमर्यादित आचरण अत्यंत निंदनीय है।

सम्प्रति इस समस्या के निराकरण के लिए गंम्भीरता पूर्वक विचार करना आवश्यक बन गया है। शिक्षक पद पर चयन से पूर्व उनके नैतिक चरित्र को संज्ञान में लिया जाना सामयिक आवश्यकता है। सर्वांगीण विकास, न्यायपूर्ण व्यवस्था और सशक्तिकरण के दृष्टिगत छात्राओं की सुरक्षा शीर्ष पर होनी चाहिए। अन्यथा की स्थिति में माता-पिता/ अभिभावक अपनी बच्चियों को दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में भेजने की मानसिकता को कैसे संजो पाएंगे?





बालिकाओं की सुरक्षा एक सामाजिक दायित्व है। शैक्षणिक संस्थानों में बालिकाओं के साथ अभद्र आचरण अत्यधिक चिंता का विषय है। इस संदर्भ में स्कूल प्रशासन को पूर्ण सजग होना चाहिए। बालिकाओं की समय-समय पर काउंसलिंग होनी चाहिए। उन्हें आत्मरक्षा के संदर्भ में प्रशिक्षित भी किया जाना उचित है। यदि कोई बालिका असहज दिखाई देती है तो उससे संवेदना पूर्वक बात करना समीचीन है ताकि वह आश्वस्त होकर अपनी वैयक्तिक समस्या से अवगत करा सके।

यह एक संवेदनशील विषय है जहां स्नेह, आत्मीयता, संरक्षण और मार्गदर्शन की अतीव आवश्यकता है। माता-पिता/ अभिभावक/ शिक्षक को ऐसी समस्याओं के निदानार्थ आगे आना चाहिए ताकि शासनिक प्रयास सफलता की ओर बढ़ सकें और बालिकाएं उन्मुक्त वातावरण में गतिशील हो सकें।

बालिकाओं की सुरक्षा के संदर्भ में तीक्ष्ण दृष्टि रखनी चाहिए। सामाजिकों की सावधानी ही बालिकाओं की शोषण से मुक्ति में प्रभावी कारक है। माता-पिता/ अभिभावकों से इस दिशा में अत्यंत गम्भीरता की अपेक्षा है ताकि वे अपनी बच्चियों की मानसिक स्थिति को- समस्याओं को- तनाव को जान सकें, सुरक्षा के प्रति सचेत कर सकें और सही मार्गदर्शन कर सकें।

विद्यालयों में सकारात्मक परिवेश को प्राथमिकता दी जाए ताकि लड़कियां अपनी बात बिना किसी संकोच वा डर के समक्ष रख सकें। स्वस्थ और अनुकूल वातावरण ही उन्हें सुरक्षा का अनुभव करा सकता है, आश्वस्त कर सकता है और विश्वस्त कर सकता है।

अस्तु, ऐसे अक्षम्य कृत्य भले ही न्यायिक प्रक्रिया के अधीन हों किंतु माता- पिता/ अभिभावकों और शिक्षकों की सजगता ही ऐसी घटनाओं को रोक सकती है, सरकारी योजनाओं को सफल बना सकती है। जब तक समाज इस ओर संवेदनशील नहीं होगा तब तक बालिकाओं को शिक्षित और सबल बनाने की संकल्पना कदाचित ही साकार होगी।

# देव पूजा, संगतिकरण व दान है यज्ञ

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**हिसार (हरियाणा)।** आर्य समाज, आर्यनगर में मुस्कान आर्या ने पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है, जिसमें संगतिकरण, देव पूजा व दान समाहित है। यज्ञमय जीवन से हमारा कल्याण होता है। यही वैदिक संस्कृति है। यज्ञोपरांत सबने मिलकर चि० अभिराज आर्य के साथ ऋषि गाथा का गान किया । परीक्षित आर्य ने परिचयात्मक उद्बोधन में चारों वेदों के नाम और उनके ऋषियों के नाम सुनाए। निलेश आर्य ने गायत्री मन्त्र के साथ कविता अनुवाद तुने हमें उत्पन्न किया..... सुनाया । श्री धर्मसिंह आर्य ने उपस्थित भावी भारत के निमार्ता प्यारे बच्चों को प्रेरणादायी कहानी सुनाई । समापन पर सबने प्रसाद का आनन्द लिया ।

# नई पीढ़ी को दें शिक्षा व संस्कार

श्री सीता राम आर्य वैदिक विधि विधान से यज्ञ कराते हुए केसरी।

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**हिसार /सीता राम आर्य।** आर्य समाज, आर्यनगर में वर्ष २०२३ के बीसवे रविवारीय यज्ञ- सत्संग कार्यक्रम में चि० हितेश आर्य ने पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न करवाया । चि० आयुष आर्य ने यज्ञमान के आसन पर बैठकर सबके साथ घी की आहूतियां दी। इस कार्यक्रम में सबने मिलकर दो भजन १) विश्वपति जगदीश तू तेरा ही ओम् नाम है... व २) कण-कण में जो रमा है हर दिल में है समाया.. गाए । इस साप्ताहिक आयोजन में श्री सीताराम आर्य ने सृष्टि संवत, युगाब्द व विक्रम संवत की संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर आचार्या बहन सुकामा आर्या ने अपने उद्बोधन में सम्पति के साथ नई पीढी में शिक्षा,संस्कार व संस्थाओं के उतराधिकारी बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया । श्री हरि सिंह आर्य व प्राचार्य श्री सुबेसिंह आर्य ने आर्य समाज में नियमित रुप से चल रहे साप्ताहिक कार्यक्रम पर प्रसन्नता व्यक्त की।

# विश्व शान्ति गायत्री मिशन चण्डीगढ ने शुरु की अपनी गतिविधियां

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**चंडीगढ़/वन्दना शास्त्री।** विश्व शान्ति गायत्री मिशन, ट्रस्ट (रजि०) किशनगढ़ (चण्डीगढ) ने अपनी गतिविधियां विधिवत आरम्भ कर दी हैं । सर्व प्रथम आचार्य श्री सुफल जी ने मिशन के ब्रांच आ?फिस # 2086 सैक्टर 19 सी में हवन-यज्ञ सुसम्पन्न करवाया । तत्पश्चात विश्व शान्ति गायत्री मिशन के मार्ग दर्शक डा० जगदीश आचार्य ने पूर्ण विधि विधान से सभी याज्ञिकों को शुद्ध मन्त्रोचारण के साथ प्रेक्टिकल रुप से संध्या -उपासना सिखाई,और सुनिश्चित किया कि प्रतिदिन शाम 6 बजे संध्या-उपासना निः शुल्क सिखाई जायेगी । जो भी भाई- बहनें, मातायें, बन्धु-बुजुर्ग व बच्चे लाभ लेना चाहें वे सादर आमन्त्रित हैं । कार्यक्रम के संयोजक आर्य कृष्ण कान्त विद्यार्थी व डिप्टी सैकेट्री पीयू के वरिष्ठ छात्र आर्य नरेश कुमार वेदालंकार ने संयुक्त रूप से बताया कि सायंकालीन सन्ध्योपासना सत्र में सपत्नीक मुख्य यज्ञमान आर्य राजेश कुमार एवं श्रीमती संतोष आर्या, विश्व शान्ति गायत्री मिशन के संरक्षक श्री विनोद कुमार शर्मा पाराशर जी, सीनियर डिप्टी चेयरमैन राजेन्द्र कुमार वर्मा व वैभव शिवाय आदि सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे । इस मौके पर घर घर में गुरुमन्त्र गायत्री महामन्त्र का प्रचार-प्रसार करने व चण्डीगढ ट्राइसिटी (त्रिनगर) को नशामुक्त करने की मुहिम चलाने पर विचार-विमर्श किया गया ।

# महर्षि दयानंद सरस्वती मार्ग का हुआ लोकार्पण

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**पदमपुर सुखरो / सुरेंद्र लाल आर्य।** महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती के अवसर पर नगर निगम कंवनगरी कोटद्वार द्वारा वार्ड नं.-20 पदमपुर सुखरो में सुंदरियाल वेडिंग पॉइंट के बगल से पूर्व आर्य समाज, कथित श्यामलाल बगीचा ,चंद्रा कॉलोनी, डॉ. पी सी जोशी , रावत जनरल स्टोर से देव सिंह बिष्ट व कुंती देवी आदि के घर जाने वाले मार्ग का नाम महर्षि दयानंद सरस्वती मार्ग रखा गया है, मार्ग का लोकार्पण वार्ड नं-20 की पार्षद श्रीमती विजेता रावत व मुख्य अतिथि श्री सुखपाल शाह (पार्षद वार्ड नं-37) ने सयुंक्त रूप से किया । इस अवसर पर पार्षद श्री सुखपाल शाह व पार्षद श्रीमती विजेता रावत को महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति सम्मान से सम्माननित किया गया, सम्मान स्वरूप पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट किये गए ।

महर्षि दयानंद सरस्वती मार्ग के उद्घाटन का दृश्य केसरी।

इस अवसर पर आर्य गिरधारी लाल महर्षि दयानंद ट्रस्ट (पंजीकृत) के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल आर्य 'सर्वोदयी पुरूष' ने माननीया महापौर व पार्षदों का आभार व्यक्त किया और कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती पर उनके नाम पर मार्ग का नाम रखकर नगर निगम कोटद्वार ने उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है । इस बेला में श्रीमती लक्ष्मी देवी ने कहा कि महिलाओं के उत्थान में महर्षि दयानंद सरस्वती का विशेष योगदान रहा है। मुख्य अतिथि श्री सुखपाल शाह ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती 19 वीं शताब्दी के महानायक थे। उन्होंने समाज मे ब्याप्त अंधविश्वास, पाखंड, रूढिवादिता के खिलाफ संघर्ष किया व 1857 में स्वतंत्रता के लिए आंदोलन की भूमि तैयार की । आर्य गिरधारीलाल महर्षि दयानंद ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित सभा की अध्यक्षता प्रोफेसर नन्दकिशोर ढोडियाल 'अरुण' व संचालन शूरबीर खेतवाल ने किया। सभा को श्री ओमप्रकाश आर्य,चक्रधर शर्मा 'कमलेश', महेश कौशिक व बलबीर सिंह रुमेला आदि ने भी सम्बोधित किया।

# आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पंकज जायसवाल को पुत्र शोक

(आर्यवर्त केसरी ब्यूरो)

**प्रयागराज।** आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री पंकज अग्रवाल जायसवाल के पुत्र सार्थक जायसवाल (18 वर्ष) का 28 मई को प्रातः 9.00 बजे आकस्मिक निधन हो गया।

अंतिम संस्कार 29 मई को पूर्ण वैदिक रीति से प्रयागराज में किया गया। आर्यावर्त केसरी परिवार प्रिय सार्थक के आकस्मिक निधन पर हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिजनों को इस गहन दुःख की बेला में शांति व धैर्य दे। हार्दिक श्रद्धांजलि! ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः..!

# अवश्यमेव भोगना पड़ता है अच्छे बुरे कर्मो का फल : आचार्य सुफल

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**हिसार।** अच्छे-बुरे सभी प्रकार के कर्मो का फल अवश्यमेव भोगना ही पड़ता है। ये विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री सुफल ने आर्य जगत की सुप्रसिद्ध आर्य समाज लाला लाजपत राय चौक नागोरी गेट हिसार के साप्ताहिक अधिवेशन में कहा कि सुख-दुःख, हानि-लाभ या जितनी भी संसार में किसी भी प्रकार की कोई समस्या है तो निश्चित रूप से सब कर्मों का ही खेल है। उन्होंने यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का हवाला देते हुए कहा कि मनुष्य को शुभ कर्म करने हुए सौ वर्षों तक सुख पूर्वक जीना चाहिए । आचार्य श्री ने कहा कि कर्मों का रहस्य (वैदिक फामूर्ला) न जानने के कारण आज पर्याप्त से भी कहीं अधिक भौतिक संसाधनों के होने के बावजूद आज का इंसान सुखी और सन्तुष्ट नहीं है । जबकि हमारे पूर्वजों दादे पडदादों के पास पर्याप्त संसाधन न होने के बावजूद भी वे हमसे कहीं अधिक सुखी-शान्त व सन्तुष्ट थे । श्री सुफलाचार्य ने सभी सुधी श्रोताओं से विनम्रतापूर्वक अपील करते हुए कहा कि हमारे पूज्य पूर्वज अनपढ़ होते हुए भी कर्मों के रहस्य को समझ कर अच्छे कर्म करते हुए सुखी शान्त और सन्तुष्ट रहते थे। आचार्य जी ने कहा कि हम सब भी अच्छे-बुरे कर्मों के भेद को जाने और वेदानुकूल कर्म करते हुए सुखी,शान्ति प्रिय और आनन्दित होवें। उन्होंने अशुभ कर्मों से बचने का सही तरीका बताते हुए कहा कि बुरे कामों से बचने के लिए परमात्मा और मौत को हमेशा याद रखें। इस अवसर पर आचार्य कर्मवीर शास्त्री धमार्चार्य, सतेन्द्र रावल उपमन्त्री, सुरेन्द्र रावल,सतीश चाहर, सुरेन्द्र मदान, राधेश्याम आर्य,अनुराग आर्य,सोमवीर आर्य, गुरुमाता शशिदेवी शास्त्री धर्मपत्नी पूज्य आचार्य विश्वामित्र शास्त्री, ईश्वरीय देवी आर्या एवं ब्राह्म महाविद्यालय के छात्र आदि सहित अनेक नर नारी उपस्थित थे ।

# स्वस्थ रहें मस्त रहें अस्त-व्यस्त न रहें : आचार्य चंद्रशेखर

## ऋषि दयानंद की 200 वीं जयंती पर व्यवहार भानु पुस्तक की निशुल्क वितरण की योजना

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**दिल्ली।** अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मंगलाचरण के रूप में नरेंद्र आर्य सुमन ने ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ने किया। उन्होंने कहा- नदी, झरने सागर की ओर जाते हैं। सागर विराट है और विशाल। एक बार झरने ने सागर से मिलने से इनकार कर दिया। उसने कहा मैं विराट होकर अगर खारा हो जाऊं, पीने योग्य ना रहूं तो मेरा कोई मूल्य नहीं है। अगर हम सब बड़े होकर समाज के काम नहीं आते तो हमारा बड़प्पन व्यर्थ है। हम सबको प्रयास करना चाहिए कि हम भले ही छोटे रहे किंतु समाज और परिवार के लिए उपयोगी बने रहे।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में डॉ राजीव ग्रोवर एक्यूप्रेशर एवं मर्म थेरेपी के विशेषज्ञ ने अनेक क्रियाएं कराई । उन्होंने कहा योग की छोटी-छोटी क्रिया बड़ा परिणाम देती हैं। नाभि दूसरा मस्तिष्क है जिसमें 70000 से अधिक नाडिया जुड़ी हुई है । नाभि की सुरक्षा के लिए नीम के तेल का उपयोग करना चाहिए । क्लैपिंग से एक्यूप्रेशर के केंद्र बिंदु जागृत होते हैं । लाफिंग थेरेपी व्यक्ति के भीतर सकारात्मक ऊर्जा जागृत करती है । मुख्य वक्ता आचार्य डॉ अजय आर्य ने कहा- स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है कि हमारा मस्तिष्क ठंडा हो, जीभ में मिठास हो और हृदय में संतोष हो। ये तीन सूत्र जीवन को सुख से भरने के लिए पर्याप्त है। वेद का मंत्र कहता है जीने के लिए देना सीखो। बुराइयों को मारना सीखो। और अच्छाइयों को जानने की इच्छा बनाए रखो। यही जीवन को सकारात्मक दिशा देने का मूल मंत्र है। आज हम सब बोलना चाहते हैं सुनना कोई नहीं चाहता। हम सभी को अपनी पीढ़ी को सुनना सिखाना चाहिए। आजकल तो एलेक्सा का जमाना है जो यह बताता है कि बोलने से सब होगा। किंतु आचार्य चाणक्य कहते हैं सुनने से सब होता है। सुनने का गुण धैर्य विकसित करता है। सुनने वाला व्यक्ति अवसाद और तनाव से दूर रहता है। आचार्य ने चुटकी लेते हुए कहा- एक बार एक महिला एक पंडित जी के पास पहुंची और उसने कहा कि मुझे घर में सुख शांति रखने का उपाय बताइए । कौन सा व्रत रखने से घर में सुख शांति रहेगी। आज कल मैं शनिवार का व्रत रख रही हूं। पंडित जी महिला के स्वभाव को जानते थे। उन्होंने कहा- आप सिर्फ मौन व्रत रखो । इसी से घर में शांति रहेगी।

कार्यक्रम में प्रेम हंस, निशा भानु डोली ईश्वर देवी जेके अग्रवाल, सत्यपाल वत्स भारत सचदेवा, रविंद्र गुप्ता, कमला हंस, कमलेश, आर्य कविता आर्य, केडी अरोड़ा, नरेंद्र, पति राम साहू, सुलोचना आर्य, संतोष धर, संतोष श्रुति, सुनीता, सुरेश, उषा, सावित्री, संतोष नंदवानी, शशि मल्होत्रा, स्नेह लता, सुदेश गुप्ता, सुनीता गांधी आदि उपस्थित रहे।

# भव्यता पूर्वक हुआ कवि सम्मेलन

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**हरिद्वार।** आर्य विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम के 95वें वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत १६ अप्रैल को उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् के सचिव डा. वाजश्रवा आर्य की अध्यक्षता में वैदिक कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन? किया, जिसमें देर रात्रि श्रोतागण प्रतिभागी कवियों द्वारा प्रस्तुत काव्य रचनाओं पर तालियाँ बजा कर झूमते रहे। कवि एवं साहित्यकार डा. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' के कुशल संयोजन व संचालन में हुये इस कवि सम्मेलन का शुभारम्भ गायत्री मंत्र पाठ से हुआ। सम्मेलन का आगाज करते हुए डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने अपनी रचना 'कौन व्याप्त है इसी व्योम में, भूमि जिसका वास है' पढ़ी। जब चेतना पथ के संपादक, कवि व गीतकार अरुण कुमार पाठक ने जब प्रेरक गीत 'रे पथिक तू चल, तेरी दूर नहीं? मंज़िल, तेरे पाँव हर पल, तेरी दूर नहीं? मंज़िल और पारिजात साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच के अध्यक्ष सुभाष मलिक ने 'शब्द छंद रस गंध तुम्हारे, अंतरमन से भुला दिये हैं' जैसे गीत प्रस्तुत करके उपस्थित श्रोताओं? को झूमने पर मजबूर कर दिया।

इस अवसर पर डा. अरविन्द नारायण मिश्र ने 'मैं गंगा हूँ, माँ गंगा हूँ' सुना कर पतितपावनी माँ गंगा का गुणगान किया और साथ ही संस्कृत कविता पाठ भी किया। कवि सम्मेलन में डा. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' ने 'महात्मा नारायण स्वामी है आर्य जगत के प्राण' सुनाकर आर्य वानप्रस्थ आश्रम के संस्थापक को अपनी काव्यांजलि भेंट की। कार्यक्रम में श्री ओम प्रकाश (उपप्रधान), सविता शर्मा (मंत्री), श्रीमती शोभा छाबड़ा (उपमंत्री), डा. सुरेंद्र कुमार शर्मा, विजय कुमार त्यागी के साथ साथ ही बड़ी संख्या में साधक-साधिकाएँ, वैदिक विद्वान, आर्य समाज के महोपदेशक, भजनोपदेशक, आर्य संन्यासी और वानप्रस्थी भी मौजूद रहे।

# 3 जून से पानीपत में होगा आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर होगा

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**पानीपत।** सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल (पंजी.) के तत्वावधान में राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दि. 3 से 11 जून 2023 तक आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, सिविल हॉस्पिटल के सामने, निकट पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस, पानीपत में हो रहा है।यह जानकारी देते हुए संचालिका मृदुला चौहान (मो. 98107 02762) ने बताया कि इस शिविर में भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनायें सहभागिता करेंगी। शिविर का शुल्क रुपए 350/ प्रति शिविरार्थी होगा। शिविर सम्बंधी पाठ्य पुस्तकें शिविर में दी जाएंगी। इस अवसर पर शिविरार्थियों को शूटिंग, धनुर्विद्या व मार्शल आर्ट आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा, साथ ही आर्य जगत के जाने-माने विद्वानों के बौद्धिक उद्बोधन से भी सभी लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा है कि सभी अपना नामांकन 1 जून 2023 तक मोबाइल नंबर 87504 82498 , 98107 02760 , 99102 34595 अथवा 98102 74318 पर अवश्य करा दें। आयोजक मंडल ने सभी प्रांतीय सभाओं, जिला सभाओं व गुरुकुलों, जहां वीरांगना दल की शाखाएं लगती हैं, से निवेदन किया है कि वे अपनी वीरांगनाओं को इस शिविर में सहभागिता करने हेतु अवश्य भेजें।

# 5 जून से कुटेसरा में होगा भव्य चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**कुटेसरा (मुजफ्फरनगर)।** उत्तर प्रदेश। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवं महर्षि दयानंद सरस्वती तथा पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि) की पावमानी प्रेरणा से जीवन ज्योति न्यास के तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन तथा राष्ट्र कल्याणार्थ ग्राम कुटेसरा में दि. 5 जून से 11 जून 2023 तक आठ दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उच्चकोटि के सन्यासी, आर्य नेता, विद्वत मंडल, आचार्य गण एवं संभ्रांत महानुभाव पधार रहे हैं। इस अवसर पर पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति प्रोफेसर महावीर जी यज्ञ के ब्रह्मा होंगे, तथा महर्षि महानंद संस्कृत महाविद्यालय, गुरुकुल लाक्षाग्रह, बरनावा के आचार्य गण व वेद पाठी विद्वान मंत्र पाठ करेंगे। कार्यक्रम के संयोजक व गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के आचार्य डॉ. योगेश शास्त्री के अनुसार यह आयोजन ग्राम कुटेसरा (जनपद मुजफ्फरनगर) स्थित गुरुकुल पब्लिक स्कूल के श्रद्धानंद परिसर में संपन्न होगा। कार्यक्रम के संबंध में आयोजन समिति (मो. 7017528576, 7453981057, 9 4 1 0 0 6 2 1 8 7 , 9837002327) से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। समिति ने श्रद्धालु जनों से कार्यक्रम में सहभागिता की अपील की है।

# वेद के कोष हैं प्रो. मनुदेव बन्धु -प्रो. विनय विद्यालंकार

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**
**हरिद्वार**
**डॉ. सुशील कुमार त्यागी अमित**

गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय, हरिद्वार के वेद विभाग के सभागार में वेद विभाग के प्रोफेसर, अध्यक्ष तथा प्राच्य विद्या संकाय के डीन प्रो. मनुदेव बन्धु की सेवानिवृत्ति के अवसर पर विदाई समारोह का भव्य आयोजन किया गया। सम्मान समारोह में बोलते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु ने कहा कि प्रो.बन्धु की बियालिस वर्ष की अवधि की शैक्षणिक सेवाएं सदा स्मरणीय रहेंगी। आपकी सरलता, सहजता तथा विद्या के प्रति अटूट अनुराग हम सबको अनुकरणीय रहेगा। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने प्रो. बन्धु साहब को विदाई समारोह पर बधाई देते हुए उनके स्वास्थ की कामना की तथा उनकी वेद के प्रति रुचि की सराहना की।

विदाई समारोह में प्रो. विनय विद्यालंकार ने उनको प्रकाश का स्तम्भ बताते हुए उनके विद्यानुरागिता के गुणों का बखान किया तथा उन्हें वेदविद्या के कोष बताया। इस बेला में वेद विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. भारत भूषण विद्यालंकार ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अतीव सौम्य अध्यापक तथा मानवता की प्रतिमूर्ति बताया। कार्यक्रम में गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर से पधारे डा. सुशील कुमार कविराज ने उनके विषय में कविता का वाचन किया तथा डा. विजयकुमार त्यागी ने जीवन को उन्नतिशील बनाने के लिये समय के महत्त्व को दशार्ने वाली स्वनिर्मित कविता का गान करते हुए प्रो. बन्धु को कविता समर्पित की। इस अवसर पर शिक्षकेतर संघ के अध्यक्ष चौधरी प्रमोद कुमार ने प्रो. बन्धु को विश्वविद्यालय का सुयोग्य शिक्षक बताते हुए उनकी विद्वाता की प्रशंसा की। संकाय की तरफ से प्रो. बन्धु की विशाल सेवाओं और उनके द्वारा वेदविद्या के प्रचार तथा प्रसार हेतु वेदसूर्यसम्मान की उपाधि से सम्मानित किया गया।

प्रोफेसर मनु देव बंधु के विदाई अभिनंदन का दृश्य केसरी

इस अवसर पर प्रो. सुरेन्द्र कुमार त्यागी, प्रो. ब्रह्मदेवविद्यालंकार, डा. दीनदयाल वेदालंकार, डा, संगीता विद्यालंकार, डा. बबलू वेदालंकार, डा. विपिन बालियान, गिरीश सुन्दरीयाल, प्रो. रामप्रकाश वर्णी, डा. रामचन्द्र मेघवाल, डा. भगवानदास जोशी, हेमन्त नेगी, डा. भारत वेदालंकार तथा संकाय समस्त छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. सत्यदेव निगमालंकार ने किया।

# तीन पीढ़ियों ने किया यज्ञ

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**आर्य नगर (हिसार)।** आर्य समाज, आर्यनगर, हिसार (हरियाणा) में वर्ष 2023 के 18वें रविवारीय यज्ञ- सत्संग कार्यक्रम में तीन पीढ़ियों ने एकत्र होकर श्रद्धा पूर्वक यज्ञ किया। इस अवसर परचि०निलेश आर्य ने सबके साथ मिलकर पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न करवाया व चि० आयुष आर्य ने घी की आहुतियां दी। सबने मिलकर पूज्य पं० सत्यपाल पथिक जी के दो गीत १)अनगिनत प्राणी जगत में, सबका दाता एक है..... व २)जब तक जग में शुभ कर्मो का संचित सामान नही होगा..... गाये । चि० हितेश आर्य व आयु० दीदी वन्दिता आर्या ने अपने परिचयात्मक उद्बोधन में आर्य समाज से प्राप्त संस्कार और शिक्षाओं के बारे में बतलाया।अग्निहोत्र से नकारात्मक उर्जा से सकारात्मक उर्जा का रुपान्तरण, उसका प्राणी मात्र को लाभ व परमात्मा अथाह उर्जा व ज्ञान का भण्डार व उसी सामर्थ्य से सृष्टि की रचना और संचालन आदि विषय को लेकर श्री सीताराम आर्य जी ने बहुत सुन्दर उपदेश किया। कार्यक्रम समापन पर सबने श्री चुन्नीलाल आर्य जी के द्वारा श्रद्धा से भिजवाए प्रसाद का आनन्द लिया।

ऋग्वेद ।। ओ३म ।। यजुर्वेद

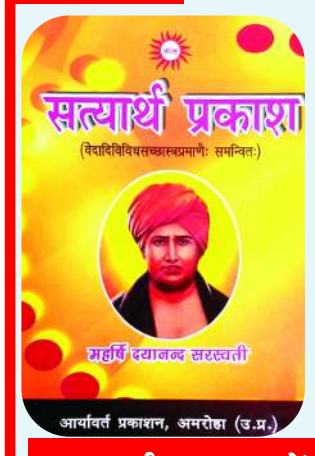


घर-घर पहुंचाएं ऋषि दयानंद का कालजयी
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश
आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा की सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की पावन मुहिम से जुड़िए
सत्यार्थ प्रकाश पर पाइए भारी छूट
दो साइजों में उपलब्ध हैं सत्यार्थ प्रकाश 15X20 /4 मोटा टाइप, पक्की जिल्द तथा 18X23 /8 आकर्षक टाइटल में उत्तम छपाई
सत्यार्थ प्रकाश में पूरे पृष्ठ पर वितरक या भेंट करता में लगेगा आपका या आपके परिवार का रंगीन चित्र । साथ ही आर्यवर्त केसरी में भी छपेगा आपका चित्र
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, आदि शुभ अवसरों अथवा अपने प्रिय जनों की पुण्य स्मृति में भेंट कीजिए सत्यार्थ प्रकाश।
आज ही करें संपर्क : डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो.94121 39333 कार्यालय 87552 68578
सामवेद अथर्ववेद

# महर्षि दयानन्द के समाज पर अनेकों उपकार- विधायक पंकज सिंह

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**नोएडा।** केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में नोएडा के विधायक पंकज सिंह से भेंट की और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44 नोएडा में लगने वाले आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का निमंत्रण दिया।उनके साथ पिंकी आर्या,गायत्री मीना,आस्था आर्या भी उपस्थित थे।

शिविर उद्घाटन पर शनिवार 3 जून को शाम 5.00 बजे पंकज सिंह मुख्य अतिथि रहेंगे। विधायक पंकज सिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के समाज पर अनेकों उपकार हैं उनके सन्देश को युवा पीढ़ी को पहुँचाना सराहनीय कार्य है। उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा से युवाओं को जोड़ने व उनके सर्वांगीण विकास के लिए "विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर "3 जून से 11 जून 2023 तक आयोजित किया जा रहा है जिसका "भव्य समापन समारोह" रविवार 11 जून को प्रातः 11 बजे एमिटी ऑडिटोरियम सेक्टर 44 नोएडा में होगा जिसमें सांसद डॉ. महेश शर्मा मुख्य अतिथि होंगे साथ ही संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान व चेयर पर्सन डॉ.अमिता चौहान आशीर्वाद प्रदान करेंगे।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने बताया कि शिविर में 200 युवक भाग लेंगे जिन्हें योग आसन,दण्ड बैठक,लाठी,जूडो कराटे, स्तूप,आत्म रक्षा शिक्षण, संध्या यज्ञ एवं भारतीय संस्कृति की जानकारी दी जाएगी।

# शिक्षा के साथ-साथ हुनर व संस्कार बहुत जरूरी:- बोहरा

## पांच दिवसीय अभिरूचि एवं संस्कार शिविर का हुआ समापन, 40 बच्चों ने लिया भाग

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

बाड़मेर । राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सांसियों का तला में दिनांक 23 मई मंगलवार से भारती फाउंडेशन एवं अभियान ग्रामोदय के सहयोग से प्रारम्भ हुआ पांच दिवसीय अभिरूचि एवं संस्कार शिविर शनिवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया । शिविर का समापन कार्यक्रम पूर्व वार्ड पंच श्रीमती ममता जी सिसोदिया, शिविर प्रभारी मुकेश बोहरा अमन, महेश कुमार सहित ग्रामीणों की उपस्थिति में आयोजित हुआ ।

भारती फाउंडेशन के जगदीश सैनी ने बताया कि सांसियों का तला में पांच दिवसीय अभिरूचि एवं संस्कार शिविर में स्किल डेवलपमेंट, अभिरुचि के कार्य एवं संस्कार निर्माण से जुड़ी गतिविधियां आयोजित हुई । जिसमें बच्चों ने आर्ट एण्ड काफ्ट, गीत, कविता, कहानी, बाल समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल को सीखा । शिविर के समापन कार्यक्रम में बच्चों ने अपने बनाएं आर्ट आदि की प्रदर्शनी लगाई तथा सीखे हुए ज्ञान व कौशल का प्रदर्शन किया । शिविर में कुल 40 बच्चों ने भाग लिया । समापन कार्यक्रम में बच्चों ने स्वयं द्वारा तैयार कहानी, कविता, समाचार आदि का पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ वाचन व प्रदर्शन किया ।

समापन कार्यक्रम में शिविर प्रभारी मुकेश बोहरा अमन ने बच्चों का हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि जीवन में शिक्षा के साथ-साथ हुनर व संस्कार बेहद जरूरी है । हमें पढ़ाई के दौरान अलग-अलग प्रकार के हुनर से भी रूबरू होते हुए उनको सीखना व समझना चाहिए । अमन ने कहा कि यह शिविर बच्चों के भावी जीवन के लिए बहुत उपयोगी व लाभदायक साबित होगा । हमारे भीतर आत्म-विश्वास हर कार्य की सफलता का पहला मंत्र है । कार्यक्रम में बच्चों ने कागज की थैली, फोटो फ्रेम, पोस्टर निर्माण, कहानी, कविता, गीत आद लेखन सहित कई गतिविधियों का प्रदर्शन किया । जिसको देखकर उपस्थिति ग्रामीणों ने बच्चों की खूब प्रशंसा की । वहीं कार्यक्रम में भारती फाउण्डेशन के जगदीश सैनी का बेहतरीन कार्य के लिए माल्यार्पण कर सम्मान किया गया । कार्यक्रम का संचालन जगदीश सैनी ने किया । इस दौरान पूर्व वार्ड पंच श्रीमती ममता जी सिसोदिया, शिविर प्रभारी मुकेश बोहरा अमन, महेश कुमार, सुनिल रामधारी, महेन्द्र सिसोदिया, जगदीश सैनी, राणी सिसोदिया, अभय सिसोदिया, लूणा खान, रविन्द्र धनदे सहित शिविरार्थी बच्चे उपस्थित रहे ।


## प्रवेश प्रारंभ हैं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की पवित्र जन्मभूमि, टंकारा में

श्री महर्षि दयानंद सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा द्वारा संचालित

**श्री महर्षि दयानंद अंतर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय एवं महात्मा सत्यानंद मुंजाल गुरुकुल**

( कक्षा 6, 7, 8, 9, व 11 में प्रवेश ले सकते हैं।)

प्रवेश हेतु आवेदन करें : दि. 15 जून से 10 जुलाई 2023 तक

सुविधाएं : आवास व्यवस्था, उच्च गुणवत्ता युक्त भोजन (पौष्टिक), निशुल्क शिक्षा, स्वच्छ वातावरण, खेलकूद का मैदान, निशुल्क प्राथमिक उपचार, प्रत्येक बच्चे का मानसिक, शारीरिक, नैतिक व भावनात्मक विकास।

**कक्षा उपदेशक हेतु प्रवेश सूचना**

इसमें इसमें दसवीं कक्षा पास छात्र प्रवेश ले सकते हैं, जिसमें संस्कार व सिद्धांत आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह 4 वर्षीय कोर्स है।
(सभी पाठ्यक्रम गुरुकुल पद्धति से ही संचालित होता है।)

प्रवेश हेतु संपर्क करें :

**आचार्य रामदेव शास्त्री**

श्री महर्षि दयानंद अंतरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा जिला मोरबी (सौराष्ट्र गुजरात) 363650, मो. 99132 51448



## आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा

द्वारा प्रकाशित

**अर्चना यज्ञ पद्धति**

(घर-घर पहुंचाएं यज्ञ की पुस्तक)

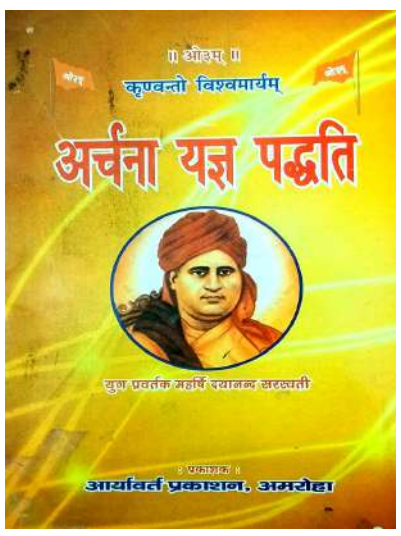


आर्य जनों की भारी मांग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों, विशिष्ट बृहद यज्ञों एवं पारिवारिक को स्थानों तथा दैनिक यज्ञ की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मंत्र, विशेष प्रार्थनाएं तथा भजन संग्रह का भी इस महत्वपूर्ण पुस्तक में समावेश किया गया है। यह पु स्तक अत्यंत आकर्षक तथा सुंदर टाइटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छप कर तैयार है। 40 पृष्ठों तथा 23 36 के 16 वें साइज की यह पुस्तक लागत से भी कम मूल्य पर विशेष छूट के साथ बिक्री हेतु उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थल

**डॉ. अशोक कुमार आर्य**, द्वारा आर्यावर्त प्रकाशन

गोकुल बिहार, निकट श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
(मो. 9412139333, 8630822099)



## आवश्यकता है प्रचारकों की

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200 वीं जयंती वर्ष एवं आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर घर घर जाकर वेद, यज्ञ , योग एवं आयुर्वेद के प्रचार कार्य को सम्पूर्ण भारतवर्ष में विस्तृत रूप में प्रचार करने के लिए 200 युवक एवम् युवतियों की आवश्यकता है ,जो ग्राम - ग्राम में जाकर वैदिक प्रचार और एक गुरुकुल की स्थापना एवं वैदिक साहित्य का वितरण करने की योग्यता और इच्छा रखते हो। उन्हें 3 माह के प्रशिक्षण के साथ सहयोग राशि भी प्रदान की जाएगी। अतः निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें ।

**शैक्षिक योग्यता कम से कम इंटरमीडिएट उत्तीर्ण होने चाहिए। रहने तथा खानपान की सुविधा भी दी जाएगी।**

**आचार्य ज्ञानेंद्र शास्त्री**

**समस्तीपुर (बिहार)**

**(मो. 7979814441, 9555509528)**



## मार्मिक अपील

**आर्ष गुरुकुल एवं श्री कृष्ण गौशाला (महर्षि दयानंद आर्ष संस्थान द्वारा आपके सहयोग से संचालित)**

गुरुकुल एवं गौशाला के वर्ष भर के लिए लगभग 100 कुंटल गेहूं +3 कुंटल दाले +तेल +मसाले +गुड +अन्य भोजन सामग्री सामर्थ्य अनुसार गौशाला के 50 गायों के लिए वर्ष भर के लिए 800 कुंटल भूसा+ 75 कुंटल खल +चोकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देकर पुण्य के भागी बने ।धर्म लाभ कमाएं आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है आपका सहयोग विगत वर्षों की भांति मिलता रहेगा ।पुण्य कार्य आपके सहयोग से निरंतर चलता रहेगा अपना अंशदान / सहयोग राशि प्रदान करने हेतु *महर्षि दयानंद आर्ष संस्थान के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के खाता संख्या 124 950 8774 आईएफएससी कोड CBIN 280236 में जमा कर अपना सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।

**गुरुकुल एवं गौशाला परिवार आपका आभारी होगा**

डॉ वीरेंद्र खंडेलवाल -प्रधान (9412170616) रमाकांत सारस्वत -मंत्री (9719003853)
अरविंद कुमार मेहता -कोषाध्यक्ष (9887362000) आचार्य धर्मेंद्र (9734606512)

**आर्ष गुरुकुल एवं श्री कृष्ण गौशाला विजयनगर दखोला मथुरा**



**सब मत पन्थों के लोगों को बुला लीजिए**
**सब प्रसन्न होकर ना जाए तो कह दीजिए**

*आर्य जगत के अद्भुत विद्वान, सरल सहज व्यक्तित्व के स्वामी, नि:शुल्क आर्य संस्कारशाला गुरुकुल गुधनी के संचालक आचार्य संजीव रूप के श्री मुख से एक बार अपनी आर्य समाज में जरूर कराएं*

संगीतमय वेद कथा

वेद कथाकार

**आचार्य संजीव रूप**

आस्था टी वी.
यूट्यूब चैनल रूप वाणी
पर देखें.!

संगीतमय विवाह संस्कार, व्याख्यान, सभी संस्कार, पारायण यज्ञ, भजन संध्या, कवि सम्मेलन, श्री कृष्ण क्या, गीता कथा, एवं आर्य समाज के सफलतम कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें..! 9997386782/9870989072

## अध्यात्म-पथ मासिक पत्रिका की ओर से भव्य विराट आयोजन

# गायत्री मंत्र का संदेश गुनगुनाते हुए जीवन जियो : डॉ. अमरजीत शास्त्री (अमेरिका)

### बुद्धि की शुद्धि का मंत्र है गायत्री : आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

**दिल्ली।** महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वी जयंती के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री के पावन सानिध्य में 16 अप्रैल 2023 को सी-2, केशवपुरम, दिल्ली में विश्व कल्याण गायत्री-महायज्ञ, विराट भजन-संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में देश विदेश से भी अतिथि पधारे। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में गायत्री यज्ञ से हुआ, जिसमें देश विदेश से पहुंचे अनेक यजमानों ने आहुति देकर पुण्य प्राप्त किया। तत्पश्चात अमेरिका से डॉ. अमरजीत शास्त्री के प्रेरक उद्बोधन ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात आर्यसमाज की परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान श्री सत्यानंद आर्य जी ने ध्वजारोहण करके वातावरण को ओम-मय बना दिया। श्रीमती कविता आर्य ने अपने साथियों के सहयोग से मधुर भजनों को प्रस्तुत कर के सभागार को संगीतमय बना दिया। श्री विनय शुक्ल विनम्र एवं दर्शनाचार्या विमलेश बंसल के राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत काव्यपाठ का सभी ने भरपूर आनंद लिया। योगाचार्य श्री कृष्णकुमार गर्ग जी के योगासनों को देखकर आर्यजन हतप्रभ रह गए। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य के लिए वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी एवं श्री यशपाल आर्य जी ने 21 महिलाओं को ह्यआर्य महिला गौरव सम्मानह्न से सम्मानित कर के उत्साहवर्धन किया। डा.

श्यामाप्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय की छात्रा अंकिता चैधरी को विश्व विद्यालय की वार्षिक परीक्षाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर ह्यमेधावी छात्रा सम्मानह्न से सम्मानित किया गया। छोटे से बच्चे अथर्व ने सायंकालीन मंत्र अर्थसहित सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। निरंतर 17 वर्षों से प्रकाशित अध्यात्म-पथ विशेषांक का विमोचन एवं निशुल्क वितरण किया गया। इस समारोह में स्वामी सुखदेव आर्य तपस्वी, श्रीमती सरोजिनी जौहर (कनाडा), श्री यशपाल आर्य, श्री अशोक सुनेजा, श्री ओम सपरा, श्री अजय चैधरी, श्री अमरनाथ टक्कर, श्री सतीश आर्य, श्री देवेन्द्र श्रीधर, श्री एस एस आर्य, श्री पी के सचदेवा, श्री सतीश भाटिया, श्री अजय भाटिया, सरदार पुष्पेंदर सिंह आदि की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यक्रम की गरिमा में चार चांद लग गए। श्रीमती मीना आर्या, श्री संजय सेतिया, श्रीमती सुनीता चैधरी, श्रीमती स्वर्णा सेतिया, अर्पित चैधरी , हर्षवर्धन आर्य, गौरव आर्य आदि को कार्यक्रम के प्रबंधन में योगदान करने के लिए आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने स्मृति-चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस समारोह में अनेक मूर्धन्य साहित्यकार, वैदिक विद्वान, कवि, समाजसेवी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शांतिपाठ के उपरांत सात्विक एवं स्वादिष्ट प्रीतिभोज की व्यवस्था थी। सुंदर व्यवस्थित कार्यक्रम के लिए देश विदेश के लोगों ने आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पूरे कार्यक्रम का यूट्यूब चैनल ह्यह्यआर्यसंदेश टीवी पर लाइव टेलीकास्ट किया गया।

## य ए इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः।
## पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः।।

**(ऋग्वेद ६/ ४५/ १६/)**

**शब्दार्थ : (यः एकः इत् कृष्टीनाम् विचर्षणिःवृषक्रतुःपतिः जज्ञे!तं उ स्तुहि!) अर्थात् जो एक ही है और जो मनुष्यों का सर्वद्दष्टा और सर्वशक्तिमान पालक हुआ है उसकी ही तू स्तुति कर।**

**व्याख्या :** हे मनुष्य! तू किस् किस की स्तुति करता फिरता है? संसार में तो एक ही स्तुति के योग्य है। संसार में हम मनुष्यों का एक ही पालक और रक्षक है। हे मनुष्य! तू न जाने किस किसको अपना पालक समझता है और उस उस की स्तुति करने? लगता है। कहीं तू रुपये- पैसेवाले व्यक्ति को अपना रक्षक समझता है, कहीं तू किसी लब्धप्रतिष्ठ रोबदाबवाले व्यक्ति को अपना स्वामी समझने लगता है। कही तू किसी दार्शनिक व कवि की प्रज्ञा व प्रतिभा के स्तुति गीत गाने लगता है, उनके ज्ञान व कवित्व पर तू मोहित रहता है। संसार में ऐसे भी मनुष्य बहुत है जो किन्हीं जीवित व जीवरहित? आकृतियों के सौन्दर्य को देखकर ही ऐसे मोहित हो जाते हैं कि उनका मन उस सौन्दर्य की प्रशंसा करता नहीं थकता।परंतु संसार में मनुष्य की स्तुति के पात्र बहुत नहीं है। एक ही है, केवल एक ही है, और वह इन सब स्तुत्य वस्तुओं का एक ही स्त्रोत है। सैकड़ो की स्तुति न कर- इन शाखाओं की स्तुति करने से कल्याण नहीं होता है- रक्षा नहीं मिलती है। रुप रस आदि ऐन्द्रियक विषयों की स्तुति तो मनुष्य का विनाश ही करती है, पालन कदापि नहीं। इनकी स्तुति तो अत्यन्त अज्ञानी पुरुष ही करते हैं। परंतु जो संसार में हमारे अन्य रक्षा करने वाले बल, ज्ञान और आनन्द है बली, ज्ञानी, और सुखी लोग है वे भी विचर्षणि वृषक्रतु नहीं है, उनमें ज्ञान और बल पर्याप्त नहीं है। संसार में ये सब बल, ज्ञान, और आनन्द तो उस एक सच्चिदानन्द महासूर्य की क्षुद्र किरण मात्र है। इन किरणों की स्तुति करने से अपने को बड़ा धोखा खाना पडेगा। हे मनुष्य! ये संसार के क्षुद्र बल और ज्ञान मनुष्य का पालन न कर सकेंगे। ये बीच में ही छोड़ देंगे। इनमें पूरा ज्ञान और बल नहीं है। अतः इसमें आसक्त होकर इनकी स्तुति मत कर। स्तुति उस मनुष्यों के एक पालक रक्षक पति की कर जो विचर्षणि होता हुआ पालक भी है, और वृषक्रतु होता हुआ पालक भी है। वह एक एक मनुष्य की विशेषता देख रहा है। प्रत्येक मनुष्य को और उसके सब संसार को वह इतनी उत्तमता से देख रहा है कि प्रत्येक मनुष्य यह ही अनुभव करेगा कि- उस मेरे प्रभु को मानो एक मात्र मेरी ही चिंता है और उस पालक पति का एक् एक क्रतु, एक् एक संकल्प, एक् एक कर्म, ऐसा वृष अर्थात बलवान है कि उसको सफलता के लिए उसे दोबारा संकल्प व यत्न करने की आवश्यकता नहीं होती है। मन्त्र का भाव है कि- हे अज्ञानी मनुष्य! अपने उस पालक पति की ही स्तुति कर, उसकी सैंकड़ों किरणों की स्तुति छोड़ कर उस वास्तविक सूर्य की ही स्तुति कर, उस एक की ही स्तुति कर, यही प्रार्थना है।

**-सुमन भल्ला**

## वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

**आदरणीय महोदय/महोदया!**

सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

**आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।**

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु **वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/-** अथवा **आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/-** निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

**खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी** **खाता संख्या : 30404724002**

**IFSC कोड : SBIN0000610**

**शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा**

**कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग**

राशि जमा करने के उपरांत **मो. नं. 9412139333** अथवा **7017448224** पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके **जन्म - दिवस** के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

**सादर- सधन्यवाद**

**शुभाकांक्षी-**

**कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार**

वैदिक कन्या गुरुकुल दबथला
निकट - किला परिक्षितगढ़, जनपद - मेरठ (उ0प्र0) 250406

- आर्ष पाठ विधि के साथ NCERT आधारित पाठ्यक्रम एवं परिवार जैसा वातावरण
- संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन, गीता, उपनिषद आदि की वैदिक शिक्षा
- गुरुकुल परिसर में CCTV कैमरों द्वारा सुरक्षा व्यवस्था, प्राकृतिक एवं सुरम्य वातावरण
- पौष्टिक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन और देसी गायों के दूध की नि:शुल्क व्यवस्था
- सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पेन्टिंग और संगीत आदि का प्रशिक्षण
- वेदपाठ, यज्ञ, योग एवं वैदिक कर्मकाण्ड आदि का प्रशिक्षण
- सुयोग्य, परिश्रमी, समर्पित एवं प्रशिक्षित शिक्षिकाओं द्वारा अध्यापन
- भोजन, छात्रावास, शिक्षा, आदि की नि:शुल्क व्यवस्था
- समाज के सहयोग और दान से संचालित आवासीय शिक्षण संस्था

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल संचालिका/ प्राचार्या
श्रीमती सोनिया आर्या
एम0 फिल् संस्कृत (स्वर्ण पदक)
एम0ए0 संस्कृत-हिन्दी-शिक्षाशास्त्र, बी0 एड0

सम्पर्क सूत्र : 7409768692, 9870882098, 9368769326

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ..प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी ..प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

**आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।**

**संपर्क सूत्र : 94121 39333 , 87552 68578**

कलर विज़िटिंग कार्ड छपवाएं
रू. 400/- में 1000 विज़िटिंग कार्ड
फोटो युक्त आकर्षक रंगीन

आर्यावर्त प्रिन्टर्स
हर प्रकार की छपाई की उत्तम सुविधा उपलब्ध है

स्कूल-कॉलेजों के हर प्रकार के फीस कार्ड, रसीद बुक, रिजल्ट कार्ड, कलर लैटर हैड, लिफाफे, कलर कार्ड, कॉलेज पत्रिका आदि के छापने की है उत्तम व्यवस्था

कृपया शीघ्र सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार (बेरियान), अमरोहा-244221
Mob. : 9412139333. 8755268578, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय मातृ दिवस पर विशेष

# मेरी मां प्रख्यात वेद विदुषी डा. सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या

## जीवन की प्रेरणादायक अमूल्य घटना-जब रीजनल इंस्पेक्टर को दिया धर्म का उपदेश

**डॉ. श्वेतकेतु शर्मा**
**आर्यावर्त केसरी समाचार**

मेरी मां वेद वेदांगों की प्रकान्ड विदुषी, पांच विषयों में आचार्य, दो विषय में एम. ए., शतपथब्राह्मण पर पीएच. डी.,शतपथब्राह्मण की भाष्यकार , विश्व की प्रथम महिला वेदाचार्य, विश्व की प्रथम महिला वेद उपदेशिका थीं। उन्होंने सम्पूर्ण देश में वैदिक धर्म प्रचार किया ।

डा. सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी जब आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छपरा, विहार में प्रधानाचार्य के पद पर 1965 से 1970 तक रही, तो यह काल उनके जीवन का नारी शिक्षा, नारी उत्थान व समाज में नारियों का सम्मान कैसे बनाएं इस हेतु महत्त्वपूर्ण रहा।

कालिज में वालिकाओं की शिक्षा के साथ वे संस्कारवान बन कर गार्गी ,अपाला, मैत्रयी जैसी विदुषियां बने, इसके लिए उन्होंने भेष-भूषा, अनुशासन, सप्ताह में एक दिन संस्कृत संम्भाषण, सप्ताह में एक दिन व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम का आयोजन, सप्ताह में एक दिन सामूहिक वैदिक यज्ञ का आयोजन, भारतीय संस्कृति के प्रत्येक विन्दुओं को जीवन में सफलता पूर्वक अवतरित करने का आयोजन प्रारम्भ किया ।

इसी बीच विहार प्रान्त की तत्कालीन रीजनल इंस्पेक्टर विद्यालय का निरीक्षण करने आई, निरीक्षण करने के बाद वे सभी दृष्टि से अत्यंत प्रसन्न हुयीं, अन्त में जब प्रवंध समिति के साथ वैठक के आयोजन में उन्होंने कहा कि विहार प्रान्त का सर्वश्रेष्ठ कालेज प्रतीत हो रहा है, परन्तु कालेज की प्राचार्या कालेज में धर्म का प्रचार प्रसार अधिक करती है, हमारा देश धर्म निरपेक्ष है , ऐसा कार्य करना उचित नहीं है।

रीजनल इंस्पेक्टर के यह वाक्य सुनकर मेरी मां ने साक्षात विद्योतमा के रुप में कहा कि आप जिस पद पर वैठी है क्या इस पद पर अधर्म का प्रचार प्रसार कर रही है? फिर क्या था उन्होंने प्रवंध समिति के सामने ४५ मिनट धर्म शब्द की व्याख्या व उपदेश प्रदान किया और कहा कि धार्यते या सा धर्मः धारण किया जाय, उसे धर्म कहते हैं, सदाचार में जीवन का नाम धर्म है, मानव को मानव बनाने का नाम धर्म है, संस्कारवान समाज बनाने का नाम धर्म है, सम्प्रदाय,मत मतान्तर, गुरुढमवाद, हिन्दु- मुसलिम- सिख- ईसाई आदि धर्म नहीं है, यह सब मत मतान्तर है, इन सब से दूर हट कर महाभारत का वह वाक्य आत्मानाः प्रतिकूलानि परेशाम् न समाचरेतअर्थात जो अपनी आत्मा को अच्छा नहीं लगता है वह व्यवहार दूसरों के साथ न करें उसे धर्म कहते हैं, हमारा गौरव मयी देश धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकता है, अपितु धर्म सापेक्ष है, मत निरपेक्ष हो सकता है परन्तु धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकता है।

इस प्रकार रीजनल इंस्पेक्टर को प्रवंध समिति के बीच धर्म का उपदेश प्रदान करने पर प्रवंध समिति के अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानाचार्य वहन जी के उपदेश देने पर विद्यालय की ग्रान्ट बन्द हो जायेगी, इस पर मेरी मां ने कहा कि यह मेरा त्यागपत्र है, आप इसे स्वीकार करें, इस पर प्रवंध समिति घवडा गई और त्याग पत्र स्वीकार करने से मना कर दिया।

मां के आत्म बल, आत्म विश्वास व विद्यालय की वालिकाओं को संस्कारवान बनाने के संकल्प का यह प्रतिफल था कि तीन महीने के बाद जब सरकार का पत्र विद्यालय में आया , तो उसमें लिखा था कि विहार प्रान्त का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है एवं इसकी ग्रान्ट दूनी की जाती है।

उनके जीवन की इस अमूल्य घटना से हमको यह शिक्षा मिलती है कि धर्मैव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षिता अर्थात यदि जो धर्म की रक्षा करेंगे , तो धर्म हमारी रक्षा करेगा।

**(पूर्व सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति,भारत सरकार, पूर्व मंत्रीः-आर्य समाज, बिहारीपुर व आर्य अनाथालय, बरेली, संयोजकः-वेद विचार मन्डल, बरेली,उ प्र।)**

# अपने माता-पिता तथा आचार्यगण के प्रति करें सदैव श्रेष्ठ व्यवहार

**स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक**
**निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, (गुजरात)**

---

**आर्यावर्त केसरी**

बहुत सी गलतियां ऐसी होती हैं, जो व्यक्ति को उस समय समझ में नहीं आती, जब वह दूसरों के साथ व्यवहार करता है। जब कोई दूसरा व्यक्ति उसके साथ वैसा व्यवहार करता है, तब उसको वे अपनी गलतियां समझ में आती हैं।

उदाहरण के लिए -- आजकल के बच्चे अनेक बार अपने माता पिता तथा गुरुजनों आदि को कहते हैं, कि आपने हमारे लिए किया ही क्या है? आपने हमको पाल पोस के कुछ बड़ा कर दिया, तो कौन सा हम पर एहसान कर दिया। वह तो आप का कर्तव्य था। 'आपने' अपना कर्तव्य निभाया, हम पर कोई एहसान नहीं किया। और आज हम जो भी हैं, 'अपनी' मेहनत से हैं। जो भी हमारे पास ऊंचा पद प्रतिष्ठा, सम्मान, धन, बल विद्या, बुद्धि आदि है, वह सब 'हमारी अपनी' मेहनत से है। इस तरह से बच्चे यदि अपने माता-पिता तथा गुरुजनों आदि को कहते हैं, तो उनका ऐसा कहना गलत है।

परंतु आज उन्हें यह अपनी गलती समझ में नहीं आती। उनकी यह गलती उन्हें उस दिन समझ में आएगी, जब उनके अपने बच्चे उनको इस तरह की भाषा बोलेंगे।

वास्तव में उनके पास आज जो भी योग्यताएं हैं, उनका बहुत बड़ा कारण ईश्वर तथा समाज के लोग तो हैं ही। इनके अतिरिक्त उनके माता-पिता और आचार्यगण भी हैं, जो वर्षों तक साक्षात उनकी सेवा करते हैं। आज जो बच्चे जीवित हैं, वे अपने माता-पिता की सेवा के कारण ही जीवित हैं। यदि बचपन में उनके माता-पिता ने उनको खिलाया पिलाया और उनका पालन पोषण न किया होता, तो वे कब के मर गए होते। यदि उनके अध्यापकगण ने उन्हें बचपन से कुछ भी पढ़ना लिखना आदि न सिखाया होता, तो वे आज भी महामूर्ख होते। वे कभी

**बाल जगत**

भी इतने विद्वान और बुद्धिमान नहीं बन पाते, जितने कि आज वे बन पाए हैं। यह बात बच्चों को अच्छी तरह से समझनी चाहिए। परन्तु बच्चे इस बात को आज नहीं समझ पा रहे। जब वे स्वयं किन्हीं

बच्चों के माता-पिता और आचार्य बनेंगे। और जब उनके अपने बच्चे और विद्यार्थी उनको ऐसा कहेंगे, कि आपने हमारे लिए जो कुछ भी किया, वह आपका कर्तव्य था। आपने उसे पूरा किया। हम पर आपने कोई एहसान नहीं किया। उस दिन उनको यह बात समझ में आएगी, कि ये हमारे बच्चे और विद्यार्थी कितने कृतघ्न हैं, अर्थात किसी के द्वारा किए गए उपकार को न मानने वाले एहसान फरामोश हैं।

यही बच्चे स्वयं माता पिता और आचार्य बनकर आज की जाने वाली अपनी इस गलती को उस दिन समझेंगे। तब यही बच्चे अपने बच्चों के विषय में ऐसा सोचेंगे -- हमने इनके लिए अपना तन मन धन लगाया, इनको बलवान तथा विद्वान बनाया। अपनी जवानी लगाई, अपनी शक्ति लगाई, अपना समय लगाया, इनकी रक्षा की, इनको पाल पोस कर बड़ा किया, स्वयं भूखे रहकर इनको पहले खिलाया, स्वयं फटे हुए जूते पहनकर भी इनको नये जूते दिलाए, इनको कितनी ही बातें सिखाई, अनेक दुर्घटनाओं तथा रोगों से बचाया, रोगी होने पर इनकी कितनी सेवा की, लाखों करोड़ों रुपए इन पर खर्च किए, और ये हमारे बच्चे आज हमें ही आंख दिखाते हैं। उस दिन उनको अपनी गलती समझ में आएगी, कि आज से कुछ वर्षों पहले अपने माता-पिता तथा आचार्यगण को हमने भी ऐसे ही कटु वचन कहे थे।

उस दिन समझ में आएगा, कि हम उस समय कितने गलत थे। इसलिए अपने माता-पिता और आचार्यगण के सामने कभी भी इस प्रकार से अभिमान अथवा उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। सदा उनका उपकार स्वीकार करना चाहिए, उनका एहसान मानना चाहिए। उनके सामने सभ्यता और नम्रता से ही व्यवहार करना चाहिए। आप कितने भी ऊंचे हो सकते हैं, अनेक विद्याओं से युक्त धनवान बलवान विद्वान और बड़े हो सकते हैं। वह सब दुनियां वालों के लिए है। उन लोगों के लिए आप बड़े नहीं हैं, जिन्होंने आपको पाल पोस कर बड़ा किया है। इसलिए अपने माता-पिता और आचार्यगण के सामने सदा सभ्यतापूर्ण व्यवहार करें। यही व्यवहार उत्तम है। आपके इसी व्यवहार से समाज में आपकी प्रतिष्ठा बुद्धिमत्ता और सफलता स्वीकार की जाएगी।

# योगासन एवं प्राणायाम

**इस स्तंभ के अंतर्गत नियमित रूप से योगासन एवं प्राणायाम संबंधी महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन किया जा रहा है। इसी क्रम में प्रस्तुत है एक योगासन के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी। आशा है विज्ञ पाठकगण इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे।**
**- संपादक**

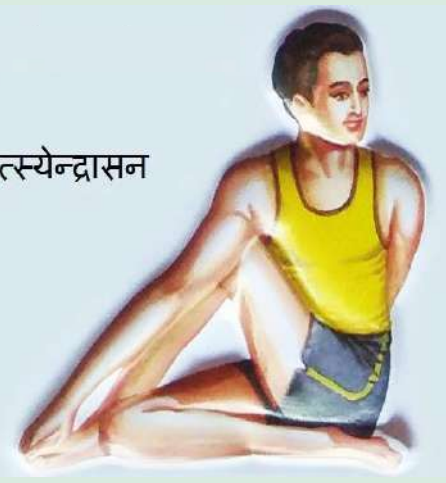


**नामकरण-**

योगी मत्स्येन्द्रनाथ के नाम पर इसका नाम रखा है।

**अभ्यास विधि-**

दोनों पैरों को सामने फैलाकर बैठें। बाएँ (स्मजि) पैर को घुटने से मोड़कर इस पैर की एड़ी को दाएँ (त्पहीज) नितम्ब के साथ लगाएँ। फिर दाएँ पैर को बाएँ घुटने के पास बाहर की ओर खड़ा करें।

तत्पश्चात् बाएँ हाथ को ऊपर उठाकर दाएँ घुटने और छाती के मध्य से निकालते हुए उसी पैर के पंजे को पकड़ें तथा दाएँ हाथ को कमर के पीछे ले जाएं। गर्दन को पीछे मोड़कर कंधे के ऊपर से दाईं ओर पीछे देखें।

यथाशक्ति इस स्थिति में रूकने के पश्चात धीरे-धीरे पूर्व स्थिति में आएँ। हाथों व पैरों की स्थिति बदलकर दूसरी ओर से भी इसी प्रकार दोहराएँ।

**लाभ -**

1. इसके अभ्यास से पैंक्रियाज, यकृत (लिवर) व आमाशय पर दबाब पड़ता है, जिससे इंसुलिन बनना प्रारम्भ हो जाता है। इससे टाइप-2 मधुमेह ठीक होता है।
2. इससे पित्त की थैली में पथरी नहीं बनती।
3. सर्वाइकल मांसपेशियाँ शक्तिशाली बनती हैं।
4. उदर विकार न होकर आँतें सबल होती हैं। जठराग्नि प्रदीप्त होकर पाचन क्रिया तीव्र होती है।
5. पेट की अतिरिक्त वसा (थंज) कम होती है।
6. इसके निरन्तर अभ्यास से अण्डकोशवृद्धि दूर होती है।

**सावधानी-**

पेट में यदि शल्य क्रिया हुई हो तो स्वस्थ होने तक इस अभ्यास को न करें। अधिक कमर दर्द में भी इसको न करें।

# वैदिक विचारधारा में है हर तरह की चुनौतियों का समाधान ...

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

इस अवसर पर श्री अर्जुन देव चड्ढा ने बताया कि कार्यक्रम में आदिवासी क्षेत्र के छात्र छात्राएं अपने पारंपरिक वेश में तैयार होकर आए थे। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने इन सभी बच्चों से मुलाकात कर प्रसन्नता जाहिर की। वह बड़े ही आत्मीयता से इन बच्चों से मिले। उन्होंने बताया कि लोकसभा अध्यक्ष अध्यक्ष श्री बिरला के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में 180 छात्र छात्रा, 70 आचार्य शिक्षक, आर्य समाज के प्रतिनिधि व वेद प्रचार मंडलों के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के मीडिया प्रभारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम ट्रस्ट द्वारा लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के दिल्ली स्थित आवास पर आयोजित आशीर्वाद कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थना उपासना मंत्रों के साथ किया। कार्यक्रम का संयोजन उप प्रतिनिधि सभा, कोटा संभाग प्रभारी श्री अर्जुन देव चड्ढा द्वारा किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ ट्रस्ट के महामंत्री जोगिंदर खट्टर ने लोकसभा अध्यक्ष को सामूहिक मंत्र पाठ करते हुए पीत वस्त्र पहनाया एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री खट्टर ने लोकसभा अध्यक्ष को जानकारी दी, कि ट्रस्ट द्वारा 17 राज्यों के आदिवासी क्षेत्र के 450 छात्र छात्राओं का "चरित्र निर्माण, वैदिक संस्कृति का ज्ञान, राष्ट्र भक्ति व भारतीय शिक्षा पद्धति" आदि पर 10 दिवसीय लगाया गया है।

# आर्य समाज बैंकॉक थाईलैंड का साप्ताहिक अधिवेशन, जब एक विशेष अधिवेशन बन गया

**आचार्य गोपाल कृष्ण आर्य**

**बैंकॉक (थाईलैंड)।** आर्य समाज बैंकॉक में दिनांक 14 मई 2023 दिन रविवार का साप्ताहिक अधिवेशन एक विशेष एलिवेशन बन गया, जब भारत वर्ष में उत्तर प्रदेश प्रांत के गोरखपुर शहर से आए हुए प्रवासी भारतीय श्री आनंद कुमार सिंह जी के 75 वर्षीय 'आर्य पिता' श्री शिवजी सिंह जी (होता) यजमान बने। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष में हरियाणा प्रांत के फरीदाबाद शहर (सेक्टर 7) से आर्य समाज की उप प्रधाना, योग धाम आश्रम की पिछले 30 वर्षों से लगातार पदासीन मंत्री और पतंजलि योगपीठ की महिला विंग की पूर्व संगठन मंत्री श्रीमती प्रेम बहल जी भी अपनी प्रवासी पुत्री सुश्री मुक्ता खन्ना के साथ यज्ञ में सम्मिलित हुईं । इस "वैदिक यज्ञ" के ब्रह्मा (ऋत्विक) आचार्य गोपाल कृष्ण आर्य जी थे ।

यज्ञोपरान्त सत्संग भवन में पदाधिकारियों ने भारत वर्ष से आए और भारत जाने वाले आर्य जनों व अतिथि बहनों का आर्य समाज बैंकॉक की परंपरा के अनुसार माल्यार्पण करके स्वागत किया। यज्ञ के यजमान तथा प्रधाना श्रीमती प्रेम बहल जी को "वैदिक-पट" पहना कर विशेष सम्मानित किया गया । सभी उपस्थित लोगों ने करतल ध्वनि से उनका अभिनंदन व्यक्त किया ।

इतना ही नहीं, सत्संग में श्री शिवजी सिंह जी ने 'नारी शक्ति' और उप प्रधाना जी ने अपने वक्तव्य में प्रेरणादाई ईश्वर भजन गाकर सभी के मनों को मुदित भी किया ।

"आर्य पुरोहित" आचार्य श्री ने महर्षि दयानंद जी के अमर ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास के आधार पर संतति अर्थात संतान को जन्म से ही स्वस्थ, योग्य, श्रेष्ठ, और संस्कारित करते हुए 'आर्य' कैसे बनावे, इस विषय पर प्रकाश डाला और इसी प्रसंग से संबंधित आर्य कवि "पथिक जी" का एक सुंदर भजन, संगीत के साथ मधुर स्वर में गाकर के इस कार्यक्रम को और भी उत्कृष्ट बना दिया ।

अंत में प्रधान श्री दिनेश चंद जी ने सभी का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया । पुनः शांतिपाठ बोलकर प्रीति भोज पर आमंत्रित करते हुए अधिवेशन को समाप्त किया।

ये जानकारी आचार्य गोपाल कृष्ण आर्य, "आर्य पुरोहित", आर्य समाज बैंकॉक, थाईलैंड ने दी।

## यज्ञ महोत्सव 2023 का किया प्रचार

**आर्यावर्त केसरी ब्यूरो**

**बिल्सी** तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित आर्य समाज के तत्वावधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी '"यज्ञ महोत्सव 2023"' का आयोजन 15 से 19 जून तक किया जा रहा है । यह आयोजन यज्ञ महोत्सव को 2003 से आरंभ कराने वाली महान समाज सेविका विदुषी स्वर्गीय प्रज्ञा आर्य को समर्पित रहेगा। यज्ञ महोत्सव के निर्देशक अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने यज्ञ महोत्सव की सफलता के लिए क्षेत्र में विशिष्ट लोगों से संपर्क किया । उन्होंने केंद्रीय मंत्री बीएल वर्मा जी को आमंत्रण दिया, साथ ही अनेक विद्यालयों के अध्यापकों व धार्मिक लोगों को आमंत्रण दे रहे हैं! ध्यान रहे यज्ञ महोत्सव की प्रसिद्धि देशभर में है इसलिए प्रदेश और देशभर से श्रद्धालु यज्ञ तीर्थ गुधनी पधारते हैं।

## अरविंद प्रधान, विनोद गुप्ता मंत्री व मयंक गुप्ता बने कोषाध्यक्ष

**(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)**

**मुरादाबाद।** दि.15 मई 2023 को आर्य समाज (गंज), स्टेशन रोड, मुरादाबाद का "वार्षिक चुनाव " पूर्ण भव्यता से आयोजित किया गया। चुनाव अधिकारी डॉ.राम मुनि की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में श्री अरविंद आर्यबंधु प्रधान, श्री सुर्य प्रकाश द्विवेदी व श्री संतोष गुप्ता उप प्रधान निर्वाचित हुए। श्री विनोद गुप्ता मन्त्री, श्री रविंद्र आर्य व श्री रामाशंकर उप मंत्री, श्री मयंक गुप्ता कोषाध्यक्ष ,श्री ओमेंद्र आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष चुनें गयें। तथा श्री आलोक गुप्ता आर्य वीर दल अधिष्ठाता चुने गए।

**वैवाहिक विज्ञापन**

**वर चाहिए**

सुंदर,सुशील,गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या,कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation ), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष,संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता। सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

**वधू चाहिए**

सोलन हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित गोयल वैश्य परिवार के 30 वर्षीय युवक (5 फुट 8 इंच) योग्यता बीबीए/एमबीए निजी व्यवसाय । अच्छी आय। शुद्ध शाकाहारी हेतु संस्कारवान युवक के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित, सुंदर, सुशील , संस्कारवान वधू चाहिए। जाति बंधन नहीं।
संपर्क सूत्र : मो. 8360658863

आर्यावर्त केसरी के प्रसार, विज्ञापन तथा समाचार आदि के सम्बन्धी किसी भी सूचना अथवा शिकायत के लिए कृपया इस नंबर पर सम्पर्क करें-
8755268578
**वीरेन्द्र सिंह**
प्रबन्ध सम्पादक

**डॉ. अशोक कुमार आर्य**
प्रधान सम्पादक



संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
वीरेन्द्र सिंह
(मोबा. : 8755268578)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

**प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333**
E-mail :
aryawartkesari@gmail.com